

सुर मुनि सुखदाई(४५)

आई अजब बहार गायो मंगलाचार भई आनंद वाधाई है।
सब कहो जैकार भयो हर्ष अपार रितु बसंत सुहाई है॥

साई सूरज प्रताप प्रकाशियो दासनि हृदय कमल विगासियो
छाई चमक चौधार मिटे सकल अंध्यार कृपा किरन वर्षाई है॥

परा प्रेम आनंद की राशी श्री मैगसि सन्तु अविनाशी
बैठे गोद सीयाराम भरे मोद अभ्राम प्यारी छबि दरिशाई है॥

रसिक शिरोमणि रस के राजा अविच कयो सतिसंग समाजा
नाम धुनी अपार छाई गगन मंझार सुर मुनि सुखदाई है॥

राम कथा रस पूर्ण ज्ञाता सिक श्रद्धा सुमरन के दाता
पूर्ण प्रेम अवतार मेरे साई सरदार सदा भक्ति मन भाई है॥

शील सिंधु सब गुण के धामा नीति निपुण नेही निष्कामा
द्रियो दीननि को दान कीया संत सन्मान
निज प्रभुता छिपाई है॥

साई साहिब सदां प्रेम उपासी प्रमोद बिपन के नित्य निवासी
मिठी अमड़ि अधार दासनि दिलदार गाए सिय रघुराई है॥